10

सहयोग, प्रतिस्पर्धा और संघर्ष

अब तक आप समाजशास्त्र में प्रयोग होने वाले कुछ मूल अवधारणाओं जैसे समाज, समुदाय, समूह, व्यक्ति तथा संगठन से परिचित हो चुके होंगे। वास्तव में, ये समाज को बुनियादी या मूल संरचना प्रदान करते हैं। समाज कोई स्थायी या स्थिर वस्तु नहीं है। यह सदा गतिशील एवं परिवर्तनशील होता है। ये परिवर्तन समाज के सदस्यों के परस्पर अंत:क्रियाओं के माध्यम से घटित होते हैं। संपर्क और आपसी बातचीत के माध्यम से, समाज में, मानवों के कार्यकलापों में अन्तर्क्रियाएँ प्रतिबिंबित होती हैं। इस संदर्भ में, कुछ ऐसी कार्य-विधियों का उल्लेख करना आवश्यक है, जिनके द्वारा व्यक्ति और समूह अपनी आवश्यकताओं और अपेक्षाओं के अनुरूप क्रिया-कलाप करते हैं जिन्हें 'सामाजिक प्रक्रियाएँ'' जाना जाता है। सहयोग, प्रतिस्पर्धा तथा संघर्ष, सामाजिक संदर्भ विशेष में, व्यक्तियों द्वारा अपनाई या की जाने वाली विभिन्न प्रकार की क्रियाओं के मूल सिद्धान्तों को चिह्नित करती हैं।

क्या आपने कभी महसूस किया है कि आप समाज को नहीं देख सकते? आप केवल व्यक्तियों को परस्पर अन्तर्क्रियाएँ करते देख सकते हैं। इन अन्त: क्रियाओं के पीछे एक अर्थ या उद्देश्य निहित है। यह मित्रों, पारिवारिक सदस्यों, पड़ोसियों, परिचितों तथा अपरिचितों के साथ अन्तर-व्यक्तिगत संबंधों में सहयोग प्रतिस्पर्धा तथा संघर्ष के रूप में विभिन्न स्वरूपों या प्रकारों में अभिव्यक्त होता है।

Notes

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप इस योग्य होंगे कि

- सामाजिक प्रक्रियाओं को समझा सकेंगे;
- उस पद्धति को पहचान सकेंगे जिसमें व्यक्ति एवं मानव-समूह अपने-अपने कार्य-कलाप करते हैं;
- सामाजिक अन्त: क्रियाओं की प्रकृति और प्रकारों का वर्णन कर सकेंगे;
- सहयोग की मूल अवधारणा तथा उसकी प्रकृति को स्पष्ट कर सकेंगे;
- प्रतिस्पर्धा की मूल अवधारणा तथा उसकी प्रकृति की व्याख्या कर सकेंगे;
- संघर्ष की मूल अवधारणा और उसकी प्रकृति का वर्णन कर सकेंगे;
- सहयोग, प्रतिस्पर्धा तथा संघर्ष को एक सामाजिक निरन्तरता के रूप में समझा सकेंगे;

10.1 सामाजिक अन्त:क्रिया के रूप में सामाजिक प्रक्रिया

सामाजिक प्रक्रिया का एक विस्तृत आशय होता है। यह उन घटनाओं से मिलकर बनती है जो भूतकाल में घटित हुई हैं। यह परंपराओं, रूढ़ियों, नैतिक आदर्शों तथा मूल प्रवृत्तियों पर भी आधारित होती है। ये प्रकृति से जटिल और अचेतन हो सकती हैं, जबकि सामाजिक अन्तर्क्रियाएँ मूर्त, परस्पर आदान-प्रदान पर आधारित, वास्तविक, तथा सामाजिक संपर्क पर निर्भर करती है।

सामाजिक प्रक्रिया मानव-समूह के जीवन में विभिन्न परिवर्तनों से संबंधित होती है। यह अन्त:क्रिया की प्रकृति पर अवलंबित होती है जिसमें ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, राजनीति, तथा आर्थिक, धार्मिक और सामाजिक पहलू सम्मिलित हो सकते हैं। अन्त:क्रिया का संबंध एक अन्य क्रिया की अनुक्रिया में किये गए कार्य या क्रिया से होता है। जब अन्त:क्रिया की पुनरावृत्ति होती है तो यह एक सामाजिक प्रक्रिया बन जाती है।

जब एक पति-पत्नी प्रेम, आत्मीयता और सहानुभूति के कारण परस्पर सहायता करते हैं तो यह क्रिया सहयोग का स्वरूप धारण कर लेती है तथा वह एक सामाजिक प्रक्रिया हो जाती है।

> सामाजिक अन्त:क्रिया तथा सामाजिक प्रक्रियाएँ अन्तर्सम्बन्धित होती हैं। एक व्यक्ति दूसरे के बिना नहीं रह सकता है।

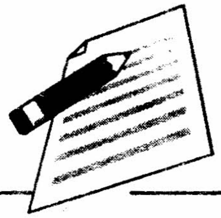

Notes

इस प्रकार ''सामाजिक प्रक्रियाओं का अर्थ होता है, व्यक्तियों या समूहों के मध्य विभिन्न प्रकार' की अन्तर्क्रिया जिसमें सहयोग संघर्ष, सामाजिक विभेदन तथा एकीकरण विकास, बंधन एवं अवनति भी शामिल हैं।''

दूसरे शब्दों में ''सामाजिक प्रक्रिया एक वह तरीका या पद्धति है, जिसमें एक समूह के सदस्यों के संबंध जब एक बार परस्पर प्रगाढ़ हो जाते हैं तो वे विशिष्ट एवं पृथक पहचान एवं विशेषता धारण कर लेते हैं।''

सामाजिक अन्त:क्रिया, जो सामाजिक प्रक्रिया से अलग पहचान रखती है, मूर्त, वास्तविक तथा वार्तालाप, सामाजिक संपर्क तथा आपसी संबंधों पर आधारित होती है। आपसी प्रभावों की एक प्रणाली में एक साथ बंधे हुए एक सामाजिक सदस्यों के परस्पर अन्त:क्रिया सामाजिक अन्त:क्रिया कहलाती हैं। अधिकतर ये समकालीक परिस्थितियों से संबंधित होते हैं और इस तरह से साकार ठोस तथा वास्तविक समझे जाते हैं।

इस भांति सामाजिक अन्त:क्रिया एक जटिल प्रक्रिया है और यह मानव-अन्त:क्रिया के तीन बड़े स्वरूपों सहयोग, प्रतिस्पर्धा तथा संघर्ष से मिलकर बनती है।

10.2 सहयोग

सहयोग का सामान्य रूप से अर्थ होता है एक सामान्य उद्देश्य के लिए मिलकर काम करना। क्या आपने अपने गाँव में या पड़ोस में लोगों के परस्पर व्यवहार की ओर उस समय ध्यान दिया है जब वे सामुदायिक उत्सव जैसे 'क्रिसमस', 'दुर्गापूजा' 'गुरू पर्व,' 'ईद' 'जन्माष्टमी' या 'रामलीला' आदि का आयोजन करते हैं। अपने आस-पड़ोस या गाँव के लोगों से कुछ लोग घर-घर, दुकान-दुकान जाकर चंदा (दान) इकट्ठा करते हैं। यह सारा चंदा एक जगह इकट्ठा किया जाता है तथा उत्सव-समिति के सदस्य इस राशि को खर्च करने का तरीका तय करते हैं। यदि हर स्तर पर सदस्य सहयोग नहीं दे तो ऐसे उत्सवों का मनाया जाना ही संभव नहीं होगा। उत्सव-स्थल की सजावट, तथा पूजा के रीति-रिवाजों का पवित्र ढंग से मनाया जाना आदि परस्पर-सहयोग के ही उदाहरण है, ऐसा सहयोग एक नियमित क्रिया-कलाप है जो हर साल होता है। स्वयंसेवक और संगठक लोग चाहे साल-दर-साल बदलते रहें पर ऐसे कार्यों का मनाया जाना निरन्तर चलता रहता है।

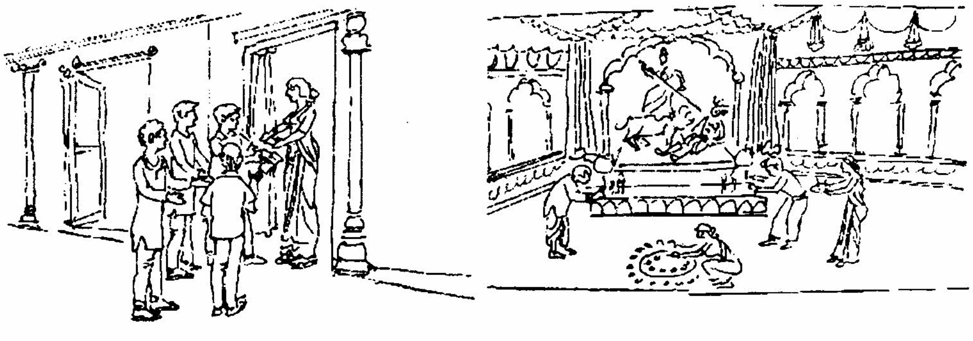

सामाजिक क्रिया-कलापों के लिए धनराशि एकत्र करते हुए

10.2.1 सहयोग के प्रकार

सहयोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष दोनों ही तरह का हो सकता है। जब लोग मिलकर एक ही कार्य साथ-साथ करते हैं जैसे प्रार्थना करना, पूजा, खेती, पत्थरों के ढेर को हटाना, या कीचड़ से मोटर गाड़ी व कार को बाहर करने हेतु धक्का देना आदि का सहयोग प्रत्यक्ष सहयोग कहलाता है। दूसरी ओर अप्रत्यक्ष सहयोग तब लिया जाता है जब लोग एक ही लक्ष्य के लिए असमान कार्य करते हैं। प्रत्येक अपना विशिष्ट ढंग का कार्य या भूमिका पूरी करता है। उदाहरण के लिए, जब घर बनाने के लिए बढ़ई, प्लम्बर राज मिस्त्री, वास्तुविद् और अकुशल मजदूर साथ-साथ काम करते हैं तो इस प्रकार हर व्यक्ति का सहयोग विशेष प्रकार के ज्ञान तथा कुशलताओं पर आधारित होता है। वर्तमान समाज में व्यक्ति को अप्रत्यक्ष सहयोग की स्थितियों का अधिकाधिक सामना तकनीकी उन्नति की विशेषज्ञता पूर्ण भूमिकाओं के कारण करना पड़ रहा है।

सहयोग तीन प्रकार का हो सकता है: (1) प्राथमिक सहयोग (2) द्वितीयक सहयोग (3) क्षेत्रीय सहयोग। घर परिवार तथा मित्रों के द्वारा किया गया सहयोग प्राथमिक सहयोग होता है जहाँ लोगों को परस्पर आमने-सामने, प्रत्यक्ष संबंधों को चुनना होता है। इस स्थिति में व्यक्ति की रुचि प्राथमिक समूह के साथ मिल जाती है। दूसरा सहयोग द्वितीय समूह में पाया जाता है जैसे सरकार, औद्योगिक प्रतिष्ठान, स्वयंसेवी संस्थाएँ तथा ट्रेड यूनियन आदि जहाँ लोग कुछ निश्चित स्वार्थ या रुचियों के अनुसार सहयोग करते हैं। क्षेत्रीय सहयोग वहाँ पाया जाता है जहाँ व्यक्ति या मानव-समूह एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा करते हैं या साथ-साथ हो जाते हैं और एक-दूसरे को विशेष उद्देश्य से सहयोग देते हैं। उदाहरण के लिए, विभिन्न राजनीतिक दलों के मध्य कुछ अवधि के लिए परस्पर सहयोग बन जाता है।

सहयोग एक ऐसी प्रक्रिया है, जो सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए अत्यंत अनिवार्य और महत्वपूर्ण है। अतएव, सहयोग एक सहगामी सामाजिक प्रक्रिया के रूप में जाना-समझा जाता है। यह एक सार्वभौम घटक है। यदि हमे समाज के एक सदस्य

Notes

की तरह रहना है तो हम सहयोग के बिना कुछ नहीं कर सकते।

सहयोग सामाजिक अन्तर्क्रिया की लक्षित तथा सचेतन प्रकार है। इसमें दो तत्व सम्मिलित हैं:

(1) सामान्य लक्ष्य (उद्देश्य) तथा (2) संगठित प्रयास। सभी व्यक्तियों का एक सामान्य उद्देश्य है जैसे उत्सव का मनाया जाना। पर यह वे तभी कर सकते हैं जब सभी सदस्य संगठित तरीके से एक-दूसरे का सहयोग दें। उदाहरणत: परिवार, समुदाय तथा राष्ट्र। परिवार के लोग परस्पर आर्थिक, संवेगात्मक, (भावनात्मक), तथा सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक-दूसरे के साथ सहयोग करते हैं। यदि परिवार की कोई सदस्य बीमार हो जाता है या किसी कारण से मानसिक तनाव में आ जाता है तो घर के अन्य सभी लोग, अपने संपूर्ण कार्य छोड़कर बीमार व्यक्ति की ओर विशेष ध्यान देने लगते हैं। यदि एक व्यक्ति डाक्टर से समय लेने और बीमार व्यक्ति को डाक्टर के पास ले जाने, दवा लाने आदि में व्यस्त हो जाता है तो दूसरे लोग उसके लिए निर्धारित खाने की वस्तु तैयार करने तथा बीमार व्यक्ति के साथ रहकर वांछित चीजें देते रहने में लग जाते हैं। यह घर के सदस्यों के सहयोग का परिणाम ही होता है कि परेशानी में पड़ा हआ व्यक्ति अपने कष्ट के क्षणों में परिस्थिति के साथ तालमेल बिठाकर ठीक हो जाता है।

पारिवारिक परिवेश में केवल मुसीबत के समय ही सहयोग दिया जाना आवश्यक नहीं समझा जाता अपितु, दैनिक जीवन में भी घर की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए परस्पर सहयोग मे कार्य निपटाए जाते हैं। जलाऊ लकड़ी इकट्ठी करना या अन्य स्रोतों से ईंधन लाना आटा-दाल पिसवाना-दलवाना, सब्जी खरीदना, भोजन पकाना, बच्चों की देखभाल करना, पालतू जानवरों की देखभाल करना, पौधों को पानी देना, पानी लाना, भर कर रखना आदि कार्य आसानी से तभी संभव हो पाते हैं जब परिवार के लोग दैनिक रूप से परस्पर सहयोग करते हों। श्रम के विभाजन का निहित सिद्धान्त ही इस प्रकार के सहयोग को सफल बना पाता है।

पाठगत प्रश्न 10.1

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति करें या सही (✓) का चिह्न लगाएँ।

1. सहयोग में.................. सम्मिलित हैं

   (अ) सामान्य लक्ष्य तथा संगठित प्रयास।

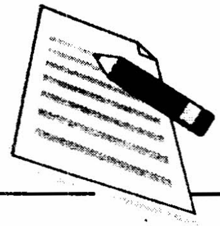

Notes

(ब) लक्ष्य और संगठित प्रयास।

(स) दो लक्ष्य और एक कार्य-नीति।

(द) इनमें से कोई नहीं।

(2) सहयोग के विशेषता................ की क्रिया में निहित होते हैं।

(अ) वाद-विवाद में भाग लेने (ब) मकान बनाने

(स) परीक्षा में प्रविष्ट होने (द) चुनाव लड़ने।

(3) उत्सव मनाने जैसे दशहरा, ईद, जन्माष्टमी आदि, में एक सामूहिक प्रयास की आवश्यकता होती है जो......... का प्रतीक होता है।

(अ) प्रतिस्पर्धा (ब) संघर्ष (स) सहयोग।

(4) सहयोग सामाजिक अन्तर्क्रिया का ......प्रकार है।

(अ) असम्मिलित (ब) लक्ष्य-केन्द्रित

(स) संस्कृति वैशेषिक (विशिष्ट)।

(5) समाजशास्त्रियों ने सहयोग को .... में वर्गीकृत किया है।

(अ) प्रत्यक्ष और परोक्ष प्रकारों।

(ब) प्राथमिक, द्वितीय तथा क्षेत्रीय प्रकारों।

(स) उपर्युक्त दोनों (अ तथा ब) प्रकारों।

(द) उपर्युक्त तीनों में से कोई नहीं।

(6) वर्तमान समाज में व्यक्ति को अधिकाधिक ....प्रकार के सहयोग का सामना करना पड़ता है।

(अ) अप्रत्यक्ष (ब) स्पष्ट

(स) प्रत्यक्ष (द) केवल प्रतिस्पर्धीय।

(7) श्रम के विभाजन का सिद्धान्त उस स्थिति में काम आता है जब,

(अ) प्रत्येक व्यक्ति या समूह को अपनी-अपनी विशिष्ट भूमिका निभानी हो।

(ब) सभी व्यक्ति और समूह उसी कार्य का करते हों।

(स) उपरोक्त में से दोनों ('अ' तथा 'ब'.)

(द) उपरोक्त में से कोई नहीं।

10.3 प्रतिस्पर्धा

प्रतिस्पर्धा भी एक प्रकार की अन्तर्क्रिया होती है। यह उन व्यक्तियों और मानव-समूहों के मध्य एक द्वंद्व, का स्वरूप होती है, जो आवश्यक नहीं कि आपास में सम्पर्क तथा विचार-विनिमय से जुड़े, हुए ही हैं। फिर भी, प्रतिस्पर्धा, व्यक्तियों या मानव-समूहों के मध्य अपनी असीमित इच्छाओं की पूर्ति या संतुष्टि के लिए की गई अव्यैक्तिक तथा अचेतन द्वंद्व होती है। यह सीमित पूर्ति के कारण होती है, जो सभी को सुलभ नहीं हो सकती।

प्रतिस्पर्धा आर्थिक प्रस्थिति प्राप्त करने के लक्ष्य से, या सामाजिक स्थान प्राप्त करने के लिए एक द्वंद्व होती है। व्यक्ति या मानव-समूहों, की प्रस्थिति एक सामाजिक व्यवस्था या पद्धति में, कई संकेतकों से निर्धारित होती है जैसे, आमदनी, सम्पत्ति, सामाजिक प्रतिष्ठा, राजनैतिक शक्ति, शिक्षा, आदि। प्रतिस्पर्धा उस विशिष्ट वस्तु को प्राप्त करने के लिए एक प्रतियोगिता के स्वरूप में परिभाषित होती है, जो मांग की पूर्ति के लिए उपयुक्त मात्रा में उपलब्ध नहीं है।

प्रतिस्पर्धा एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया से संबंध रखती है, जिसमें व्यक्ति और समूह उस वस्तु को प्राप्त करना चाहते हैं जो न्यून मात्रा में होती है, जैसे सामान, खाद्य सामग्री, सेवाएँ, सामाजिक स्थान, राजनीतिक शक्ति आर्थिक तथा व्यावसायिक अवसर। इन वस्तुओं के अनेक ग्राहक होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति इन वस्तुओं को लेना चाहता है, पर ये तो बहुत थोड़ी हैं। कम संख्या वाली वस्तुओं को सुलभ कराने के लिए अपने सभी सदस्यों के समान अवसर प्रदान करने में विश्वास रखता है।

प्रतिस्पर्धा एक सामाजिक प्रक्रिया है, जो औपचारिक संस्थानिक परिवेश में अन्तर्क्रियात्मक प्रक्रिया की विशेषताएँ बताती है। उदाहरण के लिए, कालेज और स्कूलों में विद्यार्थी गण एक दूसरे के साथ उच्चतम अंक तथा सर्वोच्च स्थान पाने के लिए प्रतिस्पर्धा रखते हैं। वे खेलकूद, वाद-विवाद तथा व्याख्यान मालाओं निबंध -लेखन, ड्रामा, पेन्टिंग तथा प्रदर्शनी एवं विभिन्न अन्य क्षेत्रों में भी प्रतिस्पर्धा करते हैं। इन सभी प्रतिस्पर्धाओं के विशिष्ट नियम होते हैं। इन नियमों का पालन करते हुए, जो व्यक्ति सबसे अच्छी उपलब्धि हासिल करता है, वही प्रतिस्पर्धा में विजयी होता है और पुरस्कार प्राप्त करता है।

प्रतिस्पर्धा की प्रक्रिया को निम्नलिखित दो उदाहरणों से स्पष्ट किया जा सकता है। क्या आपने कभी उन विभिन्न परीक्षाओं में बैठने का सोचा है जो व्यक्तियों को विभिन्न सेवाओं- बैंक, रेलवे, फौज तथा सिविल सेवाओं के लिए भर्ती करती हैं। ये नौकरियाँ बहुत सारा सम्मान और आदर भी प्रदान करती हैं किन्तु संख्या में बहुत कम होती हैं।

Notes

भर्ती की प्रक्रिया की एक क्रिया-विधि होती है, जो चुनाव और छांटने की प्रक्रियाओं को सुनिश्चित करती है। उदाहरण के लिए, संघ लोक सेवा आयोग भारतीय प्रशासनिक सेवाओं तथा अन्य ऐलाइड सेवाओं के लिए परीक्षा संचालित करती है। इस परीक्षा का प्रमुख उद्देश्य कुछ प्रत्याशियों के बड़े समूह में से कुछ प्रत्याशियों को चुनना होता है, ताकि चुने हुए व्यक्ति ही मुख्य परीक्षा में बैठ सकें। इन परीक्षाओं में प्रविष्ट होने के कुछ निश्चित नियम होते हैं, जैसे– कम से कम वांछित योग्यता, ऐच्छिक विषयों का मिलान या तालमेल, परीक्षा के माध्यम के रूप में निश्चित भाषा का चुनाव, आयु-सीमा आदि पूरी करने पर अभ्यर्थी परीक्षा में बैठ सकता है। इन परीक्षाओं में प्रविष्ट होने वाले अभ्यार्थियों को इन नियमों का पालन करना होता है। दूसरे शब्दों में, उन्हें अन्य व्यक्तियों के साथ इन नियमों के दायरे में रहकर प्रतिस्पर्धा में आना होता है। ऐसी प्रतिस्पर्धा समाज की लब्धप्रतिष्ठ और सम्मान्य पदों या स्थानों पर नियुक्त होने हेतु उपयुक्त उम्मीदवारों के चुनाव कर नियुक्ति की अनुशंसा करती है।

नगर निगमों, राज्य विधान सभाओं अथवा राष्ट्र की लोकसभा के चुनाव भी एक सामाजिक प्रक्रिया हैं, जो प्रतिस्पर्धा द्वारा निर्धारित होते हैं। इन चुनावों के लिए भी विशिष्ट नियम जैसे– नामांकन-पत्र दाखिला करना, नामांकन वापस करना, चुनाव-प्रचार हेतु आचार-संहिताएँ तथा अन्य इसी तरह के अन्य नियम होते हैं। प्रतियोगी उम्मीदवारों को एक चुनावी दायरे में, चुनाव के नियमों का पालन करना होता है अन्यथा उनको अयोग्य उम्मीदवार घोषित कर दिया जाता है।

प्रतिस्पर्धा सामाजिक द्वंद्व का मूलभूत प्रकार है और यह द्वंद्व तब उत्पन्न होता है जब माँग ज्यादा और पूर्ति बहुत कम होती है। प्रतिस्पर्धा का बुनियादी सिद्धान्त है ''कभी पूरी न होने वाली इच्छाओं वाली जनसंख्या और स्थिर तथा अपर्याप्त स्रोतों का जगत''। उदाहरणत: हमारे समाज में नौकरी खोजने वाले लोग नौकरियों की संख्या के अनुपात में बहुत अधिक हैं। अत: प्राप्य स्थानों के लिए प्रतिस्पर्धा है। जो लोग पहले से ही सेवाओं में हैं उनमें और अच्छी स्थितियाँ, पद तथा तरक्की पाने की प्रतिस्पध र्ा है। प्रतिस्पर्धा केवल रोजी-रोटी के ही लिए नहीं है अपितु विलासिता, शक्ति, सामाजिक प्रतिष्ठा, नाम तथा यश आदि के लिए भी है।

10.3.1 प्रतिस्पर्धा की विशेषताएँ

(i) **प्रतिस्पर्धा एक अव्यैक्तिक संघर्ष है**; प्रतिस्पर्धा कभी व्यैक्तिक या निजी नहीं होती। कुछ सामाजशास्त्रियों के अनुसार प्रतिस्पर्धा सामाजिक संपर्क के बिना अन्तर्क्रियाओं से संबंधित हो जाती है। यह प्रत्यक्ष रूप में किसी व्यक्ति या मानव-समूह के प्रति प्राय:, निर्देशित नहीं होती; अर्थात् इसका किसी व्यक्ति विशेष से संबंध नहीं होता।
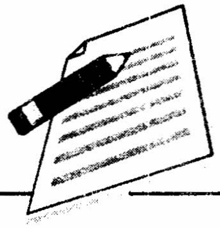
Notes

(ii) **प्रतिस्पर्धा मुख्य रूप से एक अचेतन क्रिया है पर समय-समय पर सचेतन प्रतिस्पर्धा भी घटित हो उठती है** जब कभी प्रतिस्पर्धाएँ प्रतीस्पर्धियों विषयों से अन्य प्रतिस्पर्धायों की ओर अपनी रुचि बदल लेती है तो यह प्रतिद्वंद्विता या व्यक्तिगत प्रतिस्पर्धा बन जाती है। व्यक्तिगत स्पर्धा या प्रतिद्वंद्विता एक सचेतन क्रिया होती है।

(iii) **प्रतिस्पर्धा सार्वभौमिक होती है:** कोई भी समाज में प्रतिस्पर्धा रहित नहीं होता। फिर भी प्रतिस्पर्धा का परिमाण और मात्रा विभिन्न समाजों में भिन्न होता है। सभी ज्ञात मानव समाजों तथा संस्कृतियों में प्रतिस्पर्धा मिलती है।

(iv) **प्रतिस्पर्धा उन्नति की प्रेरक समझी जाती है।** उचित प्रतिस्पर्धा आर्थिक के साथ-साथ समाजिक प्रगति की भी प्रेरक होती है, यहां तक कि यह सामान्य कल्याण के लिए भी प्रेरक है क्योंकि यह व्यक्तियों और समूहों को अच्छे से अच्छा प्रयास करने हेतु प्रेरित एवं प्रोत्साहित करती है। इसलिए कुछ समाजशास्त्रियों ने प्रतिस्पर्धा को आधुनिक सभ्यता का आवश्यक लक्षण माना है। प्रतिस्पर्धा व्यक्तियों को नए अनुभव और पहचान बनाने की उनकी अभिलाषा को संतुष्ट कर सकने के लिए बेहतर अवसर प्रदान करती है।

(v) कभी-कभी प्रतिस्पर्धा व्यक्तियों और समूहों दोनों के लिए दोषपूर्ण हो सकती है। यह भावनात्मक (संवेगात्मक) अशांति पैदा कर सकती है। अनुचित प्रतिस्पर्धा के प्रभाव सर्वाधिक बिखरावपूर्ण हो सकते हैं। सहयोग और प्रतिस्पर्धा-दोनों दैनिक जीवन में सबसे अधिक सामाजिक अन्तर्क्रियाओं को रेखांकित करने वाले तत्वों निर्मित करते हैं। कोई भी समाज न तो अनन्य रूप से प्रतिस्पर्धीय होता है और न अनन्य रूप से सहयोगी ही।

(vi) प्रतिस्पर्धा सहयोगी एवं असहयोगी दोनों प्रकार की सामाजिक प्रक्रियाओं से संबंधित होती है।

पाठगत प्रश्न 10.2 तथा 10.3

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए और रिक्त स्थानों की पूर्ति करके या सही (✓) का निशान लगाकर उत्तर दीजिए।

1. जब व्यक्ति या समूह अभाव या कमी वाली उन वस्तुओं को प्राप्त करने की कोशिश करते हैं जिनके ग्राहक बहुत हैं, तो यह स्थिति उनके मध्य ....भावना प्रकट करती है।

   (अ) सहयोगपूर्ण व्यवहार की   (ब) प्रतिस्पर्धीय

   (स) समायोजन की   (द) सामाजिक संपर्क की।

2. जब कभी प्रतिस्पर्धी लोग प्रतिस्पर्धा के **विषयों** से अपनी रुचि अन्य प्रतिस्पधियों की ओर परिवर्तित कर देते हैं तो इसे ....कहते हैं।

(अ) अप्रत्यक्ष प्रतिस्पर्धा (ब) विश्वासघात

(3) प्रतिद्वंद्विता (द) शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व।

(3) एक समाज के लोग एक दूसरे से तब स्पर्धा करते हैं जब ....।

(अ) अधिक व्यक्ति सीमित पदों के लिए प्रार्थना-पत्र देते हैं।

(ब) कम संख्या में व्यक्ति और अधिक संख्या में अवसर होते हैं।

(स) उपर्युक्त दोनों (अ तथा ब)

(द) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

(4) प्रतिस्पर्धा प्रगति के लिए....................... के स्वरूप में मानी जाती है।

(अ) बाधा (ब) प्रेरक

(स) समाप्ति (द) विरोधी

(5) प्रतिस्पर्धा प्रमुख रूप से ....पर छेड़ा गया एक द्वंद्व या संघर्ष है।

(अ) व्यक्तिगत स्तर (ब) सचेतन स्तर

(स) अव्यैक्तिक स्तर (द) उपरोक्त में से कोई नहीं।

(6) सामाजिक संपर्क के बिना अन्तर्क्रिया को .... कहा जाता है।

(अ) सहयोग (ब) प्रतिस्पर्धा

(स) संघर्ष (द) उपरोक्त में से कोई नहीं

(7) एक सामाजिक प्रक्रिया के गुण-दोष...............से जाने जाते हैं।

(अ) केवल सहयोग से (ब) केवल प्रतिस्पर्धा से

(स) उपरोक्त दोनों से (अ तथा ब से) (द) उपरोक्त में से कोई नहीं।

10.4 संघर्ष

संघर्ष सामाजिक प्रक्रिया की एक अन्य प्रकार के विरोध की प्रक्रिया होती है। यह प्रत्येक समाज या सामाजिक प्रणाली में अन्तर्निहित होता है और अभिवृत्तियों, व्यवहार रुढ़िबद्धताओं तथा सामाजिक दूरी में प्रतिबिंबित होता है। संघर्ष की प्रक्रिया

Notes

तब उदित होती है जब एक समूह के प्रतिमान और जीवन-मूल्य दूसरे समूह के प्रतिमान और जीवन-मूल्यों से टकराते हैं या जब एक समूह अपने स्वयं के जीवन-मूल्यों तथा उद्देश्यों के लिए दूसरों से संघर्ष या द्वंद्व करता है। कभी-कभी संघर्ष तब स्पष्ट दिखाई देने लगता है जब एक व्यक्ति या समूह अपने लक्ष्यों को पूरा करने की चेष्टा इस तरह से करता है कि उन्हीं उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए चेष्टा करते हुए दूसरे लोगों को बाधा पहुँचाती है।

संघर्ष की प्रक्रिया में घृणा, दुश्मनी, विरोधी स्वभाव, अवमानना, वैर, नफरत, प्रतिद्वंद्विता तथा तनाव आदि सम्मिलित होते हैं। इन सभी की अभिव्यक्ति अनके हठपूर्ण कथनों के साथ क्रियाकलापापें में भी पाई जाती है जैसे कि सामाजिक दूरी बनाए रखना, परस्पर भोजन के नियम आदि। इसी तरह अन्य मसलों पर संघर्ष व्यक्ति को विरोध करने, झगड़ा, हाथापाई, वैर, असहमति तथा मुकद्दमा डालने आदि की ओर ले जाता है। इस तरह समाजशास्त्रियों द्वारा संघर्ष एक असहयोग पैदा करने वाली सामाजिक प्रक्रिया मानी जाती है।

प्रतिस्पर्धा में नियमों का पालन किया जाता है परंतु संघर्ष में प्राथमिक रूप से कोई नियम नहीं होता। संघर्षपूर्ण स्थितियाँ तब पैदा होती हैं जब आपसी व्यवहार में लोगों के व्यक्तिगत अथवा समूह के परस्पर स्वार्थ एक दूसरे से टकरा जाते हैं। दैनिक जीवन में दिखाई देने वाले संघर्ष के सर्वाधिक सामान्य उदाहरण पिता की मृत्यु के बाद भाइयों में जायदाद के बंटवारे को लेकर संघर्ष, गाँव की दो जातियों या समूहों में संघर्ष, स्थानीय स्तर पर विभिन्न राजनीतिक पार्टियों या दलों का संघर्ष आदि हैं।

पहले समाजशास्त्री संघर्ष को एक सामाजिक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार नहीं करते थे, क्योंकि प्रारंभिक रूप से यह एक क्रिया असामाजिक क्रिया होने का संदेश देती है। बाद में यह ध्यान में लाया गया कि संघर्ष कोई शारीरिक रोग जैसी बात नहीं है। कभी-कभी संघर्ष से बहुत से महत्वपूर्ण कार्य होते हैं। संघर्ष के द्वारा भी समाज के लिए अनेक सकारात्मक परिणाम होते हैं। कम से कम, इससे अन्तर्विरोधी विविधतापूर्ण बिचार तथा नई बातें या तर्क सामने आते हैं और संघर्ष ही समाज में परिवर्तन लाने के लिए एक उपकरण का कार्य करता है।

संघर्ष में दूसरे लोगों की इच्छा के बिरुद्ध जानबूझकर विरोध, आग्रह अथवा जबरदस्ती करने की कोशिश होती है। एक प्रक्रिया के रूप में संघर्ष सहयोग का विरोधी होता है। संघर्ष से असहमति, उत्पात या शांति के लिए खतरा पैदा होता है।

Notes

10.4.1 संघर्ष के गुण–दोष

(i) संघर्ष की प्रकृति हर समाज में अलग-अलग तरह की होती है किंतु यह सभी समाजों में पाया जाता हैं अतएव, संघर्ष सार्वभौमिक होता है। फिर भी कोई भी समाज हमेशा संघर्षरत नहीं होता है।

(ii) संघर्ष एक सचेतन क्रिया है। इसमें संलग्न लोग अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए जानबूझकर एक-दूसरे के विरोध करते हैं।

(iii) मूल रूप से संघर्ष एक व्यक्तिगत क्रिया होता है। समय-समय पर यह और अधिक बल प्राप्त कर लेता है तथा इसमें अनेक लोग शामिल हो जाते हैं। ऐसे मामलों में यह एक सामाजिक समूह के स्तर पर प्रकट होने लगता है या इसमें संपूर्ण समाज ही शामिल हो जाता है।

(iv) संघर्ष एक सामाजिक प्रक्रिया है, जो कभी-कभी दिखाई देती है। यह निरंतर प्रक्रिया नहीं है। उदाहरणत: एक गाँव में दो विरोधी समूहों के बीच का संघर्ष एक उपद्रवी रूप धारण कर सकता है और उसके बाद वही शांति स्थापित हो सकती है जो इस संघर्ष से पहले थी। अत: संघर्ष में सदा निरंतरता का अभाव होता है।

(v) संघर्ष से सामाजिक परिवर्तन आता है। संघर्षपूर्ण विचार और परस्पर विरोधी विचारधाराएँ सामाजिक परिवर्तन की पूर्व शर्तें होती हैं। यदि एक समाज सदा एक रस और शान्ति अवस्था में रहेगा तो वह तब तक स्थिर बना रहेगा जब तक उसमें सामाजिक विषमता या असंतुलन नहीं आएगा। संघर्ष विषमता की अभिव्यक्ति है।

समाजशास्त्री, संघर्ष का उद्‌गम व्यक्तियों या मानव-समूहों के बीच विद्यमान सामाजिक राजनैतिक तथा आर्थिक संबंधों में निहित मानते हैं। ऐसे संबंधों में अंतर्निहित् असमानता प्रतिबिंबित होती है। इस भांति, सामाजिक संघर्ष की उत्पत्ति का मूल आधार असामानता है। एक व्यक्ति अथवा या समूह के स्तर पर व्याप्त संबंधों की समझ या पूर्णत: वंचित करने की स्थिति संघर्ष के उद्‌गम या उत्पत्ति का प्रमुख तत्व है। संघर्षरत दल इस बात को समझते हैं कि वे एक दूसरे के विरोधी दल से संघर्ष कर रहे हैं और यही जानकारी संघर्ष जारी रखने के लिए आवश्यक होती है। समाजशास्त्री मानव की नैसर्गिक प्रकृति को संघर्ष के प्रमुख स्रोत के रूप में स्वीकृति नहीं देते अर्थात् उनके अनुसार, आदमी प्रकृति से ही लड़ाकू नहीं होता। दूसरी ओर वे असमान, असंतुलित सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक संबंध रखने की प्रवृत्ति को सामाजिक संघर्ष का मूल कारण मानते हैं।

10.4.2 संघर्ष के प्रकार

संघर्ष अनेक प्रकार का हो सकता है। वे हैं: (i) युद्ध (ii) पारिवारिक कलह

(झगड़ा) (iii) मुकद्दमा, और (iv) अवैयक्तिक विचारों का संघर्ष। युद्ध एक सामूहिक संघर्ष होता है, जिसे हम सभी जानते हैं। मनुष्य में गहन असहमति की प्रवृत्ति या आवेग के कारण युद्ध हो जाया करते हैं। पारिवारिक कलह या झगड़े एक से दूसरे समूह द्वारा आरोपित किसी प्रकार के अन्याय के कारण घटित हो जाते हैं। मुकद्दमाबाजी कोर्ट-कचहरी में दायर प्रकरणों से संबंधित होती है। किसी आदर्श के लिए व्यक्तियों द्वारा किया गया संघर्ष अवैयक्तिक विचारों का संघर्ष होता है। कुछ समाज शास्त्रियों ने संघर्षों के बहुत से वर्गीकरण किए हैं। हम कुछ महत्वपूर्ण संघर्षों की विवेचना करेंगे;

(i) संघर्ष या तो (अ) प्रत्यक्ष (खुला) या (ब) अप्रत्यक्ष हो सकता है। प्रत्यक्ष प्रकार को तो दिखाई देता है किंतु अप्रत्यक्ष संघर्ष पर अदृश्य बना रहता है

(ii) संघर्ष या तो (अ) संगठित, अथवा (ब) व्यक्तिगत होता है। संगठित संघर्ष समाज के समूहों या दो समाजों के बीच घटित होता है। सांप्रदायिक दंगे, राष्ट्रों में परस्पर युद्ध, औद्योगिक मजदूरों की हड़तालें आदि संगठित संघर्षों के कुछ उदाहरण हैं। दूसरी ओर व्यक्तिगत संघर्ष समूह के भीतर आपसी जलन, द्वेष, शत्रुता, वैमनस्य या अविश्वासघात के कारण घटित होता है।

(iii) संघर्ष शुद्धरूप से अस्थाई (आल्पकालिक) हो सकता है अथवा स्थाई भी हो सकता है। व्यक्तियों के बीच सड़क के किनारे, गाँव की दूकान, शहर की बसों आदि स्थानों पर छोटी-छोटी बातों पर उठे हुए संघर्ष या झगड़े अल्पकालिक या अस्थाई संघर्ष के उदाहरण हैं। ये संघर्ष बहुत समय तक नहीं चलते। लोग प्राय: इन्हें भूल जाते हैं और सामान्य जीवन जीने लग जाते हैं। दूसरी ओर गाँव के दो विरोधी गुटों के बीच के संघर्ष या परस्पर वैमनस्य वाली दो जातियों के वंशजों के बीच का संघर्ष–चिरस्थायी संघर्ष के उदाहरण हैं। इन मामलों में भी संघर्ष सदा और निरंतर नहीं चलता। ये काफी लंबे समय तक चलते रहते हैं और कभी-कभी कई पीढ़ियों तक भी बढ़ते चले जाते हैं। फिर भी शांति और सामाजिक सौहार्द के काल भी बीच-बीच में आते हैं, जिसके बाद घोर संघर्ष के काल आ जाया करते हैं।

10.5 सहयोग, प्रतिस्पर्धा एवं संघर्ष सामाजिक सततता के रूप में

सहयोग, प्रतिस्पर्धा और संघर्ष की प्रक्रियाएं सभी प्रकार के सामाजिक अन्तर्क्रियाओं के आधार होते हैं। परिस्थिति के आधार पर लोग एक-दूसरे से सहयोग कर सकते हैं या परस्पर संघर्ष या झगड़ा कर सकते हैं। उदाहरणत: नौकरी के लिए प्रतियोगी परीक्षाओं

Notes

की तैयारी करते हुए, अभ्यर्थी साथ-साथ मिलकर सहयोगपूर्वक परस्पर चर्चा करके, नोट्स तथा अन्य पुस्तकें की अदला-बदली करके तैयारी कर सकते हैं या वे एक दूसरे से द्वेष कर सकते हैं और यहां तक कि अनुचित साधनों का प्रयोग कर सकते हैं ताकि झगड़ा खड़ा हो जाए और प्रतियोगी बालक परीक्षा में पूर्ण सफलता प्राप्त करने के उपयुक्त अवसरों से वंचित रह जाएँ। संपूर्ण विश्व के सभी समुदायों तथा समाजों में सहयोग, प्रतिस्पर्धा तथा संघर्ष के स्वरूप पाए जाते हैं। ये परस्पर इस तरह बुने हुए हैं कि इन्हें एक-दूसरे से अलग किया जाना कठिन है। इन प्रक्रियाओं की प्रकृति और सीमा विभिन्न स्थानीय, सामाजिक तथा सांस्कृतिक दशाओं व स्थितियों के अनुसार भिन्न-भिन्न हो सकती हैं किंतु उनकी मौजूदगी सार्वभौम है और ये समाज में सदा स्थाई रहने वाली प्रवृत्तियाँ हैं। इनका स्थायित्व अनिवार्य है।

पाठगत प्रश्न 10.4 तथा 10.5

प्रत्येक कथन के समक्ष "सत्य" और "असत्य" लिखकर उत्तर दीजिए:

(अ) संघर्ष तब उत्पन्न होता है जब एक समूह के प्रतिमान और जीवन मूल्य दूसरों से टकराते या द्वंद्व करने लगते हैं। सत्य/ असत्य

(ब) प्रतिस्पर्धा में नियमों का पालन होता है परंतु संघर्ष में कोई नियम नहीं होते। सत्य/ असत्य

(स) संघर्ष से कभी उपद्रव/ उत्पात या शांति को खतरा पैदा नहीं होता। सत्य/ असत्य

(द) संघर्ष से कभी सामाजिक परिवर्तन नहीं आता। सत्य/ असत्य

(ई) सहयोग प्रतिस्पर्धा तथा संघर्ष की प्रक्रिया सभी प्रकार की सामाजिक अन्तर्क्रियाओं के आधार में निहित है। सत्य/असत्य

आपने क्या सीखा

- सहयोग, प्रतिस्पर्धा और संघर्ष एक विशेष सामाजिक संदर्भ में किए गए लोगों के विभिन्न क्रिया-कलापों के मूल सिद्धान्त को निर्देशित करते हैं।

- सहयोग का सामान्यत: अर्थ होता है समान रुचि के कार्य को मिल-जुल कर पूरा करना।
- सहयोग को (1) प्राथमिक (2) द्वितीय तथा (3) क्षेत्रीय सहयोगों के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।
- सहयोग सामाजिक अंत:क्रिया की एक लक्ष्य-केन्द्रित तथा सचेतन प्रकार होता है। इसमें दो तत्व शामिल होते हैं।
- प्रतिस्पर्धा आर्थिक प्रस्थिति प्राप्त करने तथा सामाजिक स्थान पाने के लिए एक संघर्ष है।
- प्रतिस्पर्धा सामाजिक संघर्ष का मूलभूत स्वरूप है और तब घटित होता है जब माँग, पूर्ति से ज्यादा हो जाती है।
- प्रतिस्पर्धा सभी मानव समाजों और संस्कृतियों में मिलती है।
- प्रतिस्पर्धा व्यक्ति और समुदाय दोनों के लिए घातक हो सकती है। इससे भावनात्मक (संवेगात्मक) बाधाएं आ सकती हैं।
- सामाजिक अन्त:क्रिया की दूसरा प्रकार के रूप में संघर्ष एक विरोध की प्रक्रिया होती है।
- संघर्ष सहयोग का विपरीत होता है।

पाठान्त प्रश्न

(1) सामाजिक प्रक्रिया का अर्थ एवं अवधारणा बताइए।

(2) प्रतिस्पर्धा के गुण-दोषों का वर्णन कीजिए।

(3) संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

(अ) सामाजिक अन्त:क्रिया।

(ब) प्राथमिक और द्वितीयक सहयोग।

(4) लक्ष्य-केन्द्रित और संगठित सहयोगों से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।

(5) विभिन्न प्रकार के संघर्षों का वर्णन कीजिए।

Notes

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

10.1	10.2	10.3
1- (अ)	1- (अ)	(अ) सत्य
2- (ब)	2- (स)	(ब) सत्य
3- (स)	3- (अ)	(स) असत्य
4- (ब)	4- (ब)	(द) असत्य
5- (ब)	5- (स)	(ई) सत्य
6- (अ)	6- (ब)	
7- (अ)	7- (स)	

पाठ्य पुस्तकें

1. लेस्टी, जी. आर एट अल: इन्ट्रोडॅक्टरी सोशिऑलोजी (1980)
2. मैकाइवर, आर. एम. एंड सी. एच. पेज: सोसाइटी (1985)
3. गिलिन, जे. एल. एंड गिलिन-डी.पी. - एन इंट्रोडक्शन टू सोशिऑलोजी- (1949)
4. फिशर, जोसेफ एच.: सोशिऑलोजी - (1957)